Juni Khyat (जूनी ख्यात) ISSN: 2278-4632
(UGC CARE Group I Listed Journal) Vol-15, Issue-11 , No.02, November: 2025
DOI:https://doi.org/10.5281/zenodo.1857787

आधुनिक भारतीय चित्रकला की विविध प्रवृत्तियाँ एवं प्रभाववाद

डॉ. ब्रजेश कुमार

ललित कला संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

संक्षेप

आधुनिक भारतीय चित्रकला का विकास भारतीय इतिहास के अत्यंत महत्वपूर्ण और उतार चढ़ाव वाले दौर में हुआ। यह शोध पत्र इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे ब्रिटिश शासन की स्थापना और साम्राज्यवादी नीतियों ने भारत की परम्परागत कला शैलियों को प्रभावित किया । जैसे-जैसे ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रभाव बढ़ा, राजाश्रय में रहने वाले चित्रकारों का पलायन हुआ और चित्रकला के क्षेत्र में पश्चिमी प्रभाव दिखने लगे । शोध में कम्पनी शैली, कालीघाट, उड़ीसा और नाथद्वारा की पट चित्रकला जैसी क्षेत्रीय प्रवृत्तियों का विस्तार से वर्णन किया गया है । इसके अतिरिक्त, यूरोप के प्रभाववाद और अभिव्यंजनावाद जैसे वैश्विक कला आंदोलनों ने भारतीय कलाकारों की शैली और सोच को कैसे नई दिशा दी, इसका भी गहन विश्लेषण किया गया है । अंत में, यह शोध पत्र आधुनिक कला के बदलते मापदंडों और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी निरंतरता को रेखांकित करता है । यह शोध पत्र कला जगत में रुचि रखने वालों और शोधार्थियों के लिए एक व्यापक संदर्भ प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: भारतीय चित्रकला, विस्तारवाद, प्रभाववाद, प्रवृत्तियाँ, कम्पनी शैली, अभिव्यंजनावाद ।

प्रस्तावना

आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास एक उलझनपूर्ण लेकिन विकासशील कला का इतिहास रहा है । भारत की राजनीतिक स्थितियों ने यहाँ की सांस्कृतिक और कलात्मक विचारधारा को गहराई से प्रभावित किया है। जब बर्बर और लालची विदेशी शक्तियों ने भारत पर आक्रमण किया, तो यहाँ की कला और संस्कृति का विकास उस अपेक्षित दिशा में नहीं हो सका जैसा एक स्वतंत्र राष्ट्र में होना चाहिए था ।

ब्रिटिश सत्ता की जड़ें जमने के साथ ही भारत की सदियों पुरानी चित्रकला परम्पराओं का अवसान होने लगा । हिन्दू और मुस्लिम शासकों के पदच्युत होने से चित्रकारों का सबसे बड़ा सहारा राजाश्रय समाप्त हो गया । अपनी जीविका के लिए ये चित्रकार उन केंद्रों की ओर गए जहाँ अंग्रेज अधिकारी और नए भारतीय संरक्षक मौजूद थे । इस संक्रमण काल में भारतीय संरक्षकों ने भी अपनी परम्पराओं का तिरस्कार किया और पश्चिमी चित्रकारों को अधिक महत्व दिया ।

हालाँकि, दरबारों से हटकर लोक जीवन में कला की धारा बहती रही । भारतीय लोक कलाओं की वास्तविक शक्ति को तब पहचान मिली जब यूरोपीय विशेषज्ञों ने इसकी प्रशंसा की । इसी पृष्ठभूमि में आधुनिक भारतीय चित्रकला की विभिन्न शैलियों और प्रवृत्तियों का उदय हुआ, जो पुरानी परंपराओं और नए वैश्विक प्रभावों का एक जटिल मिश्रण थीं।

Copyright @ 2025 Author

DOI:https://doi.org/10.5281/zenodo.1857787

शोध समस्या

भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या यह रही है कि ब्रिटिश शासन के जाने के बाद भी हम अपनी कला का विकास उचित रीति से नहीं कर पा रहे हैं । हम अपनी प्राचीन परम्पराओं और अतीत को सही ढंग से समझने में कठिनाई महसूस करते हैं। इसके साथ ही, पश्चिमी कला आंदोलनों का भारत पर जो प्रभाव पड़ा, वह कितना आवश्यक था और कितना अनावश्यक, इस पर गंभीरता से विचार नहीं किया गया है । ऐसी स्थितियों में आधुनिक भारतीय चित्रकला की एक एकीकृत और राष्ट्रीय व्याख्या कर पाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है । यह शोध पत्र इन्हीं प्रभावों और विविध प्रवृत्तियों को व्यवस्थित रूप से समझने का प्रयास करता है।

साहित्य समीक्षा

भारतीय चित्रकला के इतिहास और प्रवृत्तियों पर कई महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं। वाचस्पति गैरोला (1963) ने भारतीय चित्रकला के ऐतिहासिक विकास को विस्तार से बताया है । डॉ० जगदीश गुप्त (1967) ने प्रगैतिहासिक कला के संदर्भ में भारतीय कला की जड़ों को खोजा है । वासुदेव शरण अग्रवाल (1966) का कार्य भारतीय कला के मौलिक स्वरूप को समझने में सहायक है ।

आधुनिक संदर्भों की बात करें तो डॉ० गिर्राज किशोर अग्रवाल (1995) ने आधुनिक प्रवृत्तियों का गहन विश्लेषण किया है । अविनाश बहादुर वर्मा (1992) ने भारतीय चित्रकला के ह्रास और विकास के चरणों को स्पष्ट किया है । रामचन्द्र शुक्ल (1974) ने कला की आधुनिक प्रवृत्तियों पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला है । इसके अलावा, पर्सी ब्राउन और आनन्द कुमार स्वामी जैसे विद्वानों ने भी राजपूत और मुगल शैलियों के वैश्विक संदर्भ में अध्ययन प्रस्तुत किए हैं । ये सभी संदर्भ ग्रन्थ आधुनिक कला के क्रमिक विकास और विदेशी प्रभावों को समझने हेतु आधार प्रदान करते हैं।

शोध विधि

यह शोध पत्र वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का पालन करता है। इसमें विभिन्न माध्यमिक स्रोतों जैसे प्रतिष्ठित कला पत्रिकाओं, ऐतिहासिक पुस्तकों और पूर्व प्रकाशित शोध लेखों का उपयोग किया गया है । मुख्य रूप से उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के कलात्मक बदलावों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। क्षेत्रीय शैलियों (जैसे कालीघाट, उड़ीसा, तंजौर) के विकास और उन पर पड़ने वाले विदेशी तकनीकी प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। शोध का आधार कलात्मक तथ्यों का संकलन और उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में व्याख्या करना है।

विविध प्रवृत्तियों का तथ्यपरक विश्लेषण

1. चित्रकला में ह्रास और कम्पनी शैली का उदय

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक राजस्थानी, पहाड़ी और मुगल शैलियों में भारी गिरावट आ चुकी थी । जयपुर शैली के चित्रों की बढ़ती मांग के कारण घटिया स्तर की कृतियाँ बनने लगीं । पहाड़ी शैली में रेखाओं की कठोरता आ गई और मुगल कला में आकृतियों के छाया प्रकाश के लिए काले रंग का भद्दा प्रयोग होने लगा । मुगल शैली तीन रूपों में बँट गई: दरबारी, लोकप्रिय और बाजारू ।

Copyright @ 2025 Author

इसी समय स्थानीय चित्रकारों ने पश्चिमी कला के मिश्रण से एक नई संकर शैली विकसित की जिसे कम्पनी शैली कहा गया । अंग्रेजों ने पश्चिमी शैली में काम करने वाले कलाकारों को भरपूर प्रोत्साहन दिया, जिससे भारतीय कलाकारों में अपनी कला के प्रति हीन भावना जागी और पश्चिमी कला के प्रति आदर बढ़ा ।

2. लोक कला के विविध रूप

बंगाल की पटुआ और कालीघाट कला: पटुआ कला ग्रामीण जीवन से जुड़ी अत्यंत प्राचीन कला है जो मिथकों पर आधारित है । कालीघाट कला में व्यावसायिकता और शहरीपन का समावेश हुआ जहाँ धार्मिक और सामाजिक विषयों के साथ हास्य व्यंग्य के चित्र भी बनाए गए । इसमें टेम्परा विधि का प्रयोग होता था और खनिज रंगों से चित्रण किया जाता था ।

उड़ीसा के पटचित्र: सत्रहवीं सदी से ही इसमें मुगल, दक्षिणी और विजय नगर शैलियों का मिश्रण मिलता है । इसमें रेखाओं की बारीकी और आलंकारिकता प्रमुख है । उन्नीसवीं सदी में इस पर कम्पनी शैली का प्रभाव भी पड़ा ।

नाथद्वारा शैली: मेवाड़ का प्रसिद्ध केंद्र होने के कारण यहाँ श्रीनाथ जी की छवियों और कृष्ण लीला का चित्रण प्रचुरता में हुआ । यहाँ के पट चित्र पिछवाइयों के रूप में भी प्रसिद्ध हैं ।

3. तंजौर शैली और काँच पर चित्रण

तंजौर में चोल राजाओं के समय से विकसित दक्षिणी शैली प्रचलित थी जिसमें बाद में मुगल और मराठा तत्वों का मेल हुआ । यहाँ के चित्रों में मूल्यवान पत्थरों और स्वर्ण पत्रों का प्रयोग किया जाता था । अठारहवीं सदी के अंत में काँच पर चित्रण की पद्धति भी लोकप्रिय हुई, जो दक्षिण भारत से शुरू होकर महाराष्ट्र और उत्तर भारत तक फैली । इसमें चीनी और यूरोपीय पद्धतियों का सम्मिश्रण देखा जा सकता है ।

परिचर्चा

प्रभाववाद का भारतीय कला पर प्रभाव

यूरोप में 1874 के आसपास शुरू हुए प्रभाववाद आंदोलन ने प्रकाश की क्रीड़ा और अमिश्रित रंगों के प्रयोग पर बल दिया । भारतीय चित्रकारों जैसे यामिनी राय और एम०एफ० हुसैन ने अपने आरम्भिक दौर में इस शैली को अपनाया । लखनऊ के रणवीर सिंह बिष्ट के जल रंग दृश्य चित्र प्रभाववादी पद्धति के बेहतरीन उदाहरण हैं ।

अभिव्यंजनावाद और सामाजिक यथार्थ

अभिव्यंजनावाद का उदय जर्मनी में हुआ जिसका उद्देश्य मानवीय भावनाओं और सामाजिक बुराइयों को तीव्र रूप में प्रकट करना था । भारत में 1940 और 1950 के दशकों में जब देश विभाजन और सांप्रदायिक दंगों की त्रासदी झेल रहा था, तब कलाकारों ने इस शैली के माध्यम से समाज की विकृतियों और पीड़ा को चित्रित किया । सतीश गुजराल, रामकुमार और फ्रांसिस न्यूटन सूजा जैसे कलाकारों ने मानवीय निराशा और क्रूरता को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया ।

शैलोज मुखर्जी की कला में पेरिस के फविवाद का प्रभाव मिलता है, जबकि अमृता शेरगिल ने अजन्ता की प्रेरणा के साथ आधुनिक अभिव्यंजना का समन्वय किया । रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारतीय कलाकारों को

Copyright @ 2025 Author

वैश्विक ज्ञान से समृद्ध होने के लिए प्रेरित किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि कलाकारों ने केवल स्वदेशी के मोह को छोड़कर विदेशी नवीनता का स्वागत किया ।

निष्कर्ष

आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास संघर्ष, समन्वय और निरंतर नवीनता की खोज का इतिहास है। जहाँ ब्रिटिश शासन ने परम्परागत शैलियों को आघात पहुँचाया, वहीं उसने वैश्विक कला प्रवृत्तियों के द्वार भी खोले । कम्पनी शैली से लेकर समकालीन अभिव्यंजनावाद तक, भारतीय कलाकारों ने अपनी जड़ों और लोक जीवन की ऊर्जा को कभी पूरी तरह नहीं छोड़ा । कला के मापदण्ड काल के साथ तेजी से बदल रहे हैं और आज की समकालीन कला नूतन युग की परिचायक है । अंतत; यह मानव मस्तिष्क की सृजन प्रक्रिया ही है जो प्रकृति के रूपों को अर्थ प्रदान करती है और कला को जीवित रखती है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- गैरोला, वाचस्पति (1963). भारतीय चित्रकला. इलाहाबाद ।
- गुप्त, डॉ० जगदीश (1967). प्रगैतिहासिक भारतीय कला. दिल्ली ।
- अग्रवाल, वासुदेव शरण (1966). भारतीय कला. बनारस ।
- अग्रवाल, डॉ० गिर्राज किशोर (1995). आधुनिक भारतीय चित्रकला. अलीगढ़ ।
- वर्मा, अविनाश बहादुर (1992). भारतीय चित्रकला का इतिहास. बरेली ।
- शुक्ल, रामचन्द्र (1974). कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ. लखनऊ ।
- त्रिपाठी, गयाचरण (1971). प्राचीन भारतीय कला. कानपुर ।
- वर्मा, डॉ० सोम प्रकाश (1998). मुगल चित्रशैली. जयपुर ।
- स्वामी, आनन्द कुमार (1976). राजपूत पेन्टिग्स. दिल्ली ।
- मजूमदार, क्षितीन्द्र नाथ (1952). चित्रेगीत गोविन्द. इलाहाबाद ।

Copyright @ 2025 Author